

Padma Shri



DR. GIRIDHARI RAM GAUNJHU 'GIRIRAJ' (POSTHUMOUS)

Dr. Giridhari Ram Gaunjhu 'Giriraj' retired from the Department of 'Tribal and Regional Languages', Ranchi University, Ranchi. He was an academician, author, cultural personality and a theatre worker. In addition to this he was also an icon of Jharkhand's cultural language. He was an historian and the mirror of Jharkhand's art and culture. He has done profound researches and guided countless students. He also wrote many dramas, plays, stories, essays, criticism, translation, satires, sketches, reminiscence, screenplay, editing, poetry etc. Therefore people called him as a 'walking encyclopedia' in this regard.

2. Born on 22nd December, 1949 in Belwadag, Khunti (Jharkhand), Dr. Gaunjhu was graduated from St. Xavier's College Ranchi with Hindi (Honours) in 1970 and did Bachelor of Education (B.Ed.) in 1971, Post Graduation (P.G.) with Hindi in 1973 and Bachelor of Laws (L.L.B.) in 1976 from Ranchi University. In 1988 he earned his Doctor of Philosophy (Ph.D.) under Dr. Shrawan Kumar Goswami, his research topic was "Peter Shanti Navrangi : Vyaktitva Evam Krititva".

3. Dr. Gaunjhu has successfully guided more than 18 Ph.D. aspirants. He also worked as a guest lecturer in P.G. Department of Hindi at St. Xavier's College Ranchi, Central University Ranchi and many others Universities. His endeavour to preserve the entity of language, literature and culture of Jharkhand through his dramas, poetry, stories, discussion and conversation broadcast on All India Radio and Doordarshan is really appreciable. He also successfully staged many plays written by him like "Jharkhand Ka Amrit Putra : Marang Gomke Jaipal Singh", "Akhra Nindaye Gelak" in the field of theatrical presentation and acting.

4. Dr. Gaunjhu has written more than 35 books yet. His famous published works are ; - "Peter Shanti Navrangi : Vyaktitva Evam Krititva" 1990; "Akhra Nindaye Gelak" (Play) 1990; "Jharkhand Ka Amrit Putra : Marang Gomke Jaipal Singh" (Play) 2001; "Marang Gomke" (Play) 2002; "Maharaja Madra Munda (Play) 2004; "Hiranagpur Kar Heera" (Play) 2012; "Mahabali Radhey Kar Balidan" (Play) 2019; "Dhangar" (Nagpuri Stories) 2019; "Om Vishwavidyalaya Namah" (Samiksha) 2000; "Jharkhand Ke Lok Nritya" 2004; "Jharkhand Ke Vadhyas Yantra" 2007; "Jharkhand Me Matri Bhasa Ki Bhumika" 2010; "Angna-Nagpuri Lok Kathayen" 2012; "Nagpuri Sikhen" 2013; "Jharkhand Ka Lok Sangeet" 2015; "Jharkhand Ki Sanskritik Virsat" 2015; "Jharkhand Vibhuti Aur Sahid" 2018; "Jharkhand Ki Paramparik Kalayen" 2015; "Ritu Ke Rang Maander Ke Sang" 2018; "Nagpuri Sahitya Darpan" 2019; "Nagpuri Prakirna Sahitya" 2019; "Jharkhand Ke Vividh Aayam" 2020; "Oraon Evam Sadaan Sanskriti" 2020 and etc.

5. Dr. Gaunjhu received many awards and honours such as, "Jharkhand Ratna" in 2003 by Lok Seva Samiti, Ranchi; "Jharkhand Samman" by the Government of Jharkhand in 2018; "Jharkhand Navratna" for his notable contribution in 9 Jharkhandi languages Santhali, Mundari, Ho, Kudukh, Khariya, Nagpuri, Kurmali, Khortha and Panchparganiya amongst other prestigious honours and awards.

6. Dr. Gaunjhu passed away on 15th April 2021

पद्म श्री



डॉ. गिरिधारी राम गौड़ 'गिरिराज' (मरणोपरांत)

डॉ. गिरिधारी राम गौड़ 'गिरिराज' रांची विश्वविद्यालय, रांची के 'जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा विभाग' से सेवानिवृत्त हुए। वह एक शिक्षाविद, लेखक, सांस्कृतिक व्यक्तित्व और रंगकर्मी थे। इसके अलावा, वह झारखंड की सांस्कृतिक भाषा के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति भी थे। वह एक इतिहासकार और झारखंड की कला और संस्कृति के दर्पण थे। उन्होंने गहन शोध किया है और अनगिनत छात्रों का मार्गदर्शन किया है। उन्होंने कई नाटक, कहानियाँ, निबंध, समालोचना, अनुवाद, व्यंग्य, रेखाचित्र, संस्मरण, पटकथा, संपादन, कविता आदि भी लिखे। इसलिए, लोग उन्हें झारखंड की संस्कृति का 'वॉकिंग इनसाइक्लोपीडिया' कहते थे।

2. 22 दिसंबर, 1949 को बेल्वादाग, खूंटी (झारखंड) में जन्में, डॉ. गौड़ ने 1970 में रांची के सेंट जेवियर्स कॉलेज से हिंदी (ऑनर्स) में स्नातक, 1971 में बैचलर ऑफ एजुकेशन (बी.एड.), 1973 में हिंदी में स्नातकोत्तर (पीजी) और 1976 में रांची विश्वविद्यालय से विधि स्नातक (एलएलबी) किया। 1988 में उन्होंने डॉ. श्रवण कुमार गोस्वामी के मार्गनिर्देशन में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएचडी) की उपाधि प्राप्त की। उनका शोध विषय था "पीटर शांति नवरंगी: व्यक्तित्व और कृतित्व"।

3. डॉ. गौड़ ने 18 से अधिक पीएच.डी. छात्रों का सफल मार्गदर्शन किया है। उन्होंने सेंट जेवियर्स कॉलेज, रांची, केंद्रीय विश्वविद्यालय, रांची और कई अन्य विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में अतिथि व्याख्याता के रूप में भी काम किया। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर प्रसारित अपने नाटकों, कविताओं, कहानियों, चर्चा और बातचीत के माध्यम से झारखंड की भाषा, साहित्य और संस्कृति को संरक्षित करने का उनका प्रयास वास्तव में प्रशंसनीय है। उन्होंने नाट्य प्रस्तुति और अभिनय के क्षेत्र में कई स्वरचित नाटकों यथा "झारखंड का अमृत पुत्र : मारंग गोमके जयपाल सिंह", "अखरा निंदाय गेलक" का भी सफलतापूर्वक मंचन किया।

4. डॉ. गौड़ ने अब तक 35 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। उनकी प्रसिद्ध प्रकाशित रचनाएँ हैं; – "पीटर शांति नवरंगी: व्यक्तित्व और कृतित्व" 1990; "अखरा निंदाय गेलक" (नाटक) 1990; "झारखंड का अमृत पुत्र: मारंग गोमके जयपाल सिंह" (नाटक) 2001; "मारंग गोमके" (नाटक) 2002; "महाराजा माद्र मुंडा (नाटक)" 2004; "हीरानागपुर कर हीरा" (नाटक) 2012; "महाबली राधे कर बलिदान" (नाटक) 2019; "धनगर" (नागपुरी कहानियाँ) 2019; "ओम विश्वविद्यालय नमः" (समीक्षा) 2000; "झारखंड के लोक नृत्य" 2004; "झारखंड के वाद्ययंत्र" 2007; "झारखंड में मातृभाषा की भूमिका" 2010; "अंगना-नागपुरी लोक कथाएं" 2012; "नागपुरी सीखें" 2013; "झारखंड का लोक संगीत" 2015; "झारखंड की सांस्कृतिक विरासत" 2015; "झारखंड विभूति और शहीद" 2018; "झारखंड की पारंपरिक कलाएं" 2015; "ऋतु के रंग मांदेर के संग" 2018; "नागपुरी साहित्य दर्पण" 2019; "नागपुरी प्रकीर्ण साहित्य" 2019; "झारखंड के विविध आयाम" 2020; "उरांव एवं सदान संस्कृति" 2020 आदि।

5. डॉ. गौड़ को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए, जैसे 2003 में लोक सेवा समिति, रांची द्वारा "झारखंड रत्न"; 2018 में झारखंड सरकार द्वारा "झारखंड सम्मान"; 9 झारखंडी भाषाओं संधाली, मुंडारी, हो, कुदुख, खरिया, नागपुरी, कुरमाली, खोरथा और पंचपरगनिया में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए "झारखंड नवरत्न" और अन्य प्रतिष्ठित सम्मान और पुरस्कार।

6. डॉ. गौड़ का 15 अप्रैल, 2021 को देहावसान हो गया।